अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2024) दिनांक : 27.08.2024

समय सीमा : 3 घंटा षष्टम् वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

पच्चीस बोल, तत्त्व चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–20

प्र. 1 **पच्चीस बोल–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) पाप तत्त्व का तेरहवां व चौदहवां भेद लिखें।

(ख) नौंवा तथा ग्यारहवां दण्डक किसका? लिखें।

(ग) आश्रव तत्त्व का पन्द्रहवां व सोलहवां भेद लिखें।

(घ) पुद्गलास्तिकाय के द्रव्य, क्षेत्र और गुण बताएं।

(ड़) काययोग के अन्तिम चार भेदों के नाम लिखें।

(च) पन्द्रहवां बोल लिखें।

(छ) चक्षुरिन्द्रिय के विषय लिखें।

प्र. 2 **तत्त्वचर्चा–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) पाप और पापी एक या दो?

(ख) सिद्ध भगवान छह में कौन? नौ में कौन?

(ग) धर्म पुण्य या पाप?

(घ) साधु तपस्या करे वह व्रत में या अव्रत में?

(ड़) अठारह पापों के सेवन का त्याग करना छह में कौन? नौ में कौन?

(च) बंध छह में कौन? नौ में कौन?

(छ) आश्रव चोर या साहूकार?

प्र. 3 **पच्चीस बोल की चर्चा–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें–(किसमें और कौन-कौन से?) 5

(क) तीन पर्याप्ति।

(ख) जीव के नौ भेद।

(ग) तेजस दण्डक।

(घ) पांच लेश्या।

(ड़) चार चारित्र।

(च) बारह गुणस्थान।

(छ) दस योग।

प्र. 4 **चतुर्भंगी–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) किस प्राण में जीव कम, किस प्राण में जीव अधिक?

(ख) तुम्हारे में योग कितने?

(ग) आश्रव किस कर्म का उदय?

(घ) द्रव्य जीव या अजीव?

(ड़) किस चारित्र वाले जीव कम, किस चारित्र वाले जीव अधिक?

(च) लेश्या किस कर्म का उदय?

(छ) किस शरीर के जीव कम, किस शरीर के जीव अधिक?

जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) कर्म प्रकृति–20

प्र. 5 **जैन तत्त्व प्रवेश–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) रूपी-अरूपी द्वार।

(ख) परमात्म द्वार।

(ग) देव आयुष्य बंध के कारण लिखें।

(घ) औपशमिक भाव की परिभाषा लिखते हुए उनके भेदों के नाम लिखें।

(ड़) द्रव्य-गुण-पर्याय द्वार–विशेष गुणों को परिभाषित करते हुए उसके भेदों के नाम लिखें।

(च) द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव गुण द्वार–आश्रव को विवेचित करें।

प्र. 6 **कर्म प्रकृति–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) दर्शनावरणीय कर्म की गुणस्थान में अवस्थिति लिखें।

(ख) वेदनीय कर्म की स्थिति लिखें।

(ग) दर्शनमोह की प्रकृतियों में मिथ्यात्व मोहनीय का कार्य एवं स्थिति लिखें।

(घ) विहायोगति नाम किसे कहते हैं?

(ड़) उच्च गोत्र कर्म भोगने के हेतुओं का वर्णन करें।

(च) निकाचित कर्म किसे कहते हैं?

(छ) अन्तराय कर्म की प्रथम दो उत्तर प्रकृतियों का वर्णन करें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय, तृतीय खण्ड)–20

प्र. 7 **बावन बोल–**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) आठ आत्मा में सावद्य कितनी? निरवद्य कितनी?

(ख) चौबीस दण्डकों में लेश्या कितनी?

(ग) उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कौन? निरवद्य कौन?

(घ) सम्यक्त्व, मिथ्यात्व कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

प्र. 8 **इक्कीस द्वार–**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) देवता–योग, उपयोग, लेश्या, भाव, दृष्टि, लब्धि।

(ख) अनिन्द्रिय–जीव के भेद, गुणस्थान, भाव, आत्मा, दण्डक, पक्ष।

(ग) वनस्पति–गुणस्थान, योग, आत्मा, दण्डक, वीर्य, लब्धि।

(घ) सास्वादन सम्यक्त्वी–उपयोग, भाव, आत्मा, गुणस्थान, योग, दृष्टि।

प्र. 9 **जैन तत्त्व प्रवेश–**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) श्रावक-प्रतिमा द्वार–आठवीं, नौंवी और दसवीं प्रतिमा का वर्णन करें।

(ख) सम्यग् दर्शन द्वार–प्रारम्भ से लिखते हुए सम्यक्त्व के दूषण तक लिखें।

(ग) प्रमाण द्वार–परोक्ष ज्ञान से प्रारम्भ करते हुए सप्तभंगी तक लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान–20

प्र. 10 **लघु दण्डक–**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) नारकी की अवगाहना।

(ख) संहनन द्वार।

(ग) वेद द्वार।

(घ) आहार द्वार।

(ड़) योग द्वार में–सात नारकी से प्रारम्भ करते हुए वायुकाय तक लिखें।

प्र. 11 **पांच ज्ञान–**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) मल्लक दृष्टान्त लिखें।

(ख) अवधिज्ञान और मनःपर्यवज्ञान की विशुद्धिकृत तथा क्षेत्रकृत भिन्नता लिखें।

(ग) अक्षर श्रुत और अनक्षर श्रुत को परिभाषित करते हुए अक्षर श्रुत के तीन प्रकारों का वर्णन करें।

संजया-नियंठा–20

प्र. 12 **संजया–**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) परिहार विशुद्धि चारित्र–गति-स्थिति-पद्वी द्वार लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट गति किस अपेक्षा से ली गई है?

(ख) सामायिक चारित्र एवं सूक्ष्म सम्पराय चारित्र का काल द्वार लिखें।

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र–अन्तर द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

(घ) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र–आकर्ष द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक भवों की उत्कृष्ट प्राप्ति के पीछे क्या अपेक्षा है?

प्र. 13 **नियंठा–**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) प्रतिसेवना को समझाते हुए, उनके प्रकारों का वर्णन करें।

(ख) निर्ग्रन्थ–कर्म उदीरणा, उपसंपद्हान, आकर्ष द्वार और भव द्वार लिखें।

(ग) पुलाक–स्थिति द्वार लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट स्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है।